Nāsadīyam
A Multi-Disciplinary National Research Journal (Annual)
Peer Reviewed/Refereed
Available online at: https://nasadiyam.dmmkkr.ac.in/
ISSN: 3108-0200 (Online)
Volume 4, Issue 1 (Jan – Dec), 2025, Pp 1-10

आधुनिक हिन्दी काव्य में चित्रित नारी

डॉ॰ मनजीत कौर
सहायक प्रवक्त्री (हिन्दी विभाग)
दयानन्द महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ई-मेलः tinymanjeet@gmail.com
दूरभाषः 7988684685

संक्षेपिका

नारी ईश्वर द्वारा रचित अनुपम रचना होने के साथ-साथ सृष्टि के विकास का महत्त्वपूर्ण आधार भी है। नारी के बिना सृष्टि के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मानव जाति के इतिहास के आरम्भ से लेकर आज तक नारी जाति की दशा और दिशा में असंख्य, अद्भुत अविस्मरणीय परिवर्तन हुये हैं। नारी ने अनेक समस्याओं कुप्रथाओं, पाखण्डों, आडम्बरों को सहन करते हुये बड़ी निडरता से अपने अस्तित्व की रक्षा की तथा मानवता के कल्याण हेतु अनेक कीर्तिमान भी स्थापित किये। भारतीय संस्कृति में नारी को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखा गया है। भारतवर्ष के वैदिक काल, महाकाव्य काल आदि के साहित्य से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में नारी का समाज में विशेष महत्त्व था। उस समय नारी को अनेक अधिकार प्राप्त थे। विभिन्न सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक कार्य नारी के अभाव में पूर्ण नहीं माने जाते थे। निःसन्देह नारी और पुरुष सृष्टि की गाड़ी के दो पहिये हैं। सृष्टि के संचालन में दोनों का ही विशेष योगदान है। फिर भी पुरुष की अपेक्षा नारी को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये अधिक संघर्ष करना पड़ा। सृष्टि की निर्मात्री तथा शक्ति स्वरूपा होने के बावजूद भी नारी को हीन दृष्टि से देखा गया। नारी के जीवन को जानने व समझने का महत्त्वपूर्ण स्रोत साहित्य ही है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक के नारी जीवन की करुण गाथा को साहित्य ही उजागर करता है। साहित्य से ही ज्ञात होता है कि भारतीय समाज द्वारा कभी तो नारी को सम्मान के सर्वोच्च सिंहासन पर विराजमान किया गया तो कभी उसका शोषण कर उसे प्रताड़ित किया गया; नारी को केवल वस्तु समझा गया। हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत नारी जीवन के प्रत्येक पक्ष को, उसके मनोभावों को, उसके संघर्षों को, अधिकारों व कर्त्तव्यों को, सुख-दुख आदि को अत्यन्त उत्कृष्ट ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। सामान्य रूप से हिन्दी साहित्य को चार भागों में विभाजित किया जाता है।

(क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल (ग) रीतिकाल (घ) आधुनिक काल।

आधुनिक काल को आगे छः भागों में विभाजित किया गया है।

(क) भारतेन्दु युग (ख) द्विवेदी युग (ग) छायावाद युग (घ) प्रगतिवाद (ङ) प्रयोगवाद (च) समकालीन कविता।

आधुनिक काल के इन समस्त कालखण्डों के अन्तर्गत सम्पूर्ण नारी जीवन को अत्यन्त यथार्थ रूप से तथा आकृष्ट शैली में चित्रित किया गया है।

कुंजी शब्द - शक्तिस्वरूपा, आलम्बन, पुनः प्रतिष्ठित, स्त्रीत्व, पृष्टभूमि, आंदोलित।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य आधुनिक हिन्दी काव्य में चित्रित नारी के विभिन्न रूपों से, उसकी दशा व दिशा से, उसके संघर्षों से समाज को परिचित करवाना है। इसके अतिरिक्त वर्तमान समाज के हृदय में नारी जाति के प्रति सम्मान और संवेदना जागृत करना भी प्रस्तुत शोध पत्र का लक्ष्य है।

साहित्य अवलोकन

साहित्य चाहे किसी भी देश, काल या संस्कृति से जुड़ा क्यों न हो। नारी चित्रण के अभाव में परिपूर्ण नहीं हो सकता। प्रत्येक भाषा के साहित्य में नारी जीवन को किसी न किसी रूप में अवश्य उजागर किया गया है। हिन्दी भाषा के विभिन्न विद्वानों ने नारी जीवन के प्रत्येक पक्ष को अपने साहित्य में विशेष स्थान प्रदान किया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत भारतेन्दु युग से लेकर आज तक असंख्य हिन्दी कवियों ने जगत जननी नारी की व्यथा, विवशता, वेदना के साथ-साथ उसकी असीम शक्ति को भी उत्कृष्ट अभिव्यक्ति प्रदान की है। इससे पूर्व के साहित्य यथा आदिकालीन, भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन साहित्य में भी नारी चित्रण को महत्त्व प्रदान किया गया है। यद्यपि आदिकालीन समाज में नारी की दशा बहुत अच्छी नहीं थी, उसकी विभिन्न समस्याओं उसके शोषण का वर्णन इस काल के साहित्य में दिखाई देता है। आदिकालीन कवियों यथा - **विद्यापत्ति, अमीर खुसरो, जगनिक, चन्द्रबरदाई, दलपति विजय** आदि द्वारा रचित काव्य में नारी शृंगार रस का आलम्बन मात्र दिखाई देती है। इसके पश्चात् भक्ति कालीन काव्य में नारी सम्मान को पुनःप्रतिष्ठित करने का कार्य कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, रविदास, मीराबाई आदि महान साहित्यकारों द्वारा किया गया। रीतिकाल में नारी के केवल शृंगारिक रूप को ही उजागर किया गया। आधुनिक काल के अनेक साहित्यकारों ने अपने काव्य के माध्यम से नारी जीवन की अनेक कठिनाइयों को सम्पूर्ण समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इनमें से कुछ प्रमुख अग्रणी कवियों के काव्य की चर्चा प्रस्तुत शोध पत्र में की जा रही है जिन्होंने अपनी कविताओं में स्त्रीत्व को पुनः जीवित करने का सुंदर प्रयास किया है।

आधुनिक हिन्दी काव्य में चित्रित नारी

वास्तव में आधुनिक हिन्दी काव्य एक विस्तृत पृष्टभूमि से परिपूर्ण साहित्यिक आयाम है जिसे छः भागों में विभाजित किया गया है - (क) भरतेन्दु युग (ख) द्विवेदी युग (ग) छायावाद (घ) प्रगतिवाद (ङ) प्रयोगवाद (च) समकालीन कविता। इन विभिन्न कालों के अनेक कवियों ने अपने काव्य में नारी को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया तथा नारी की प्रतिष्ठा को समाज में पुनः स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन कवियों ने अपनी ज्वलंत रचनाओं से भारतीय समाज को फिर से आंदोलित कर दिया। आधुनिक हिन्दी काव्य में चित्रित नारी के विभिन्न रूपों को निम्नलिखित आयामों के अन्तर्गत उजागर किया जा सकता है:-

(क) भारतेन्दुयुगीन काव्य में चित्रित नारी

आधुनिक युग के अग्रणी एवं सर्वश्रेष्ठ कवि श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाम पर इस काल का नाम पड़ा है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने अपने समय के भारतीय समाज को अपने काव्य के माध्यम से अत्यन्त आकृष्ट एवं यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस काल को हिन्दी साहित्य में 'नव जागरण काल' व 'पुनर्जागरणकाल' के नाम से भी जाना जाता है। कुछ विद्वान इस काल को 'सन्धि युग' भी कहते हैं।

भारतेन्दुयुगीन प्रमुख कवि

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास, अम्बिकादत्त व्यास, ठाकुर जगमोहन सिंह, वियोगी हरि, बालकृष्ण भट्ट, रायकृष्ण दास, जगन्नाथदास रत्नाकर, राधाचरण गोस्वामी, लाला सीताराम, दामोदर शास्त्री सप्रे, कार्तिक प्रसाद खत्री भारतेन्दु काल के कवियों ने अपने काव्य में नारी को विशेष स्थान प्रदान किया है। इन्होंने भारतीय समाज में नारी जीवन के विभिन्न रूपों को सुन्दर ढंग से व्यक्त किया। नारी के संघर्ष वेदना, विवशता, शोषण, अनेक सामाजिक कुरीतियों को अपने काव्य के माध्यम से व्यक्त किया। श्रीधर पाठक एक स्थान पर प्राकृतिक सौन्दर्य में नारी की सुन्दर कल्पना करते हैं व कहते हैं:-

"प्रकृति यहां एकान्त बैठि निज रूप सँवारति।
पल-पल पलटति भेस छनिक छवि छिन्न-छिन्न धारति"
विमल अंबु-सर-मुकुरन महँ मुख-बिंब निहारति।
अपनी छवि पै मोहि आप ही तन-मन बारति।"

यहाँ कवि ने प्रकृति की कल्पना नारी के रूप में की है। इन्होंने अपनी अनेक रचनाओं में राधा-कृष्ण का भी वर्णन किया है। इन्होंने राधा के सौन्दर्य का मर्यादित चित्रण किया है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एक स्थान पर कहते हैं:-

"ऊधो जू सूधो गहो वह मारग, ज्ञान की तेरे जहौं गुदरी है।
कोऊ नहीं सीख मानिहै उधौ, इक श्याम की प्रीति प्रतीति खरी है।
ये ब्रजबाला सबै इक सी, 'हरिचन्द' जू मंडली ही बिगरी है।
एक जो होय तो न सिखाइए, कूप ही में यहाँ भाँग परी है।"

यहाँ कवि ने गोपियों और उद्धव की वार्तालाप के माध्यम से स्पष्ट किया है कि गोपियाँ अत्यन्त चतुराई से उद्धव के आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर देती हैं और उसे परास्त कर देती हैं। यहाँ गोपियाँ उद्धव से शास्त्रार्थ करती दिखाई दे रही हैं। यहाँ कवि ने गोपियों के माध्यम से नारी की बुद्धिमता, चतुराई एवं कृष्ण के प्रति उनकी स्नेह भावना को अत्यन्त सुन्दर ढंग से चित्रित किया है। इसी प्रकार इस काल के समस्त कवियों ने नारी जीवन के विभिन्न पक्षों को अपने काव्य में सुन्दर ढंग से चित्रित किया है।

(ख) द्विवेदीयुगीन काव्य में चित्रित नारी

द्विवेदी युग आधुनिक काल का दूसरा चरण है। इसका नामकरण आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के नाम पर हुआ। देशभक्ति, आदर्शवाद, बौद्धिकता, प्रकृति चित्रण, सामाजिकता आदि इस काल की मुख्य प्रवृत्तियाँ हैं। इस काल में नीति, आदर्श, इतिवृत्तात्मकता का अद्भुत समन्वय भी देखने को मिलता है।

द्विवेदी काल के कवि आ॰ महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', पद्म सिंह शर्मा, बाबू गुलाब राय, लोचन प्रसाद पाण्डेय, बाबू गुलाबराय, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही, नाथूराम शर्मा शंकर, रायदेवी प्रसाद पूर्ण, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी आदि।

इस काल के कवियों के काव्य में भारतीय समाज के प्रति गहरी चिन्ता एवं संवेदना स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। इस समय का समाज अनेक कुरीतियों एवं अन्धविश्वासों से घिरा हुआ था। समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त गंभीर एवं दयनीय थी। बाल विवाह, अन्मेल विवाह, दहेज प्रथा आदि कुप्रथाओं ने समाज को खोखला कर दिया

था। इस कारण इस काल के अनेक सचेत कवियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में क्रान्ति उत्पन्न करने के प्रयास किये।

डॉ० शिव कुमार शर्मा के शब्दों में

"द्विवेदी युग के कवि की दृष्टि समाज के सभी पक्षों पर पड़ी और अब उसकी वाणी में खण्डनात्मकता के स्थान पर मंडनात्मकता और सद्भावना झंकृत हो उठी। इस युग के कवि को समाज की सर्वांगीण उन्नति अभीष्ट थी।"

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'प्रिय प्रवास' में राधा के विरह का चित्रण करते हुये कहते हैं:-

"प्रिय पति, वह मेरा प्राणप्यारा कहाँ हैं।
दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है॥
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ
वह हृदय हमारा नैन-तारा कहाँ हैं।"

यहाँ कवि ने श्रीकृष्ण के विरह में तड़प रही राधा की संवेदनशील दशा का अत्यन्त मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। द्विवेदी काल के ही एक कवि सत्यनारायाण 'कविरत्न' अपनी रचना 'भ्रमरदूत' में कहते हैं:-

"नारी सिक्षा निरादरत जे लोग अनारी,
ते स्वदेस-अवनति-प्रचंड-पातक अधिकारी।
निरखि हाल मेरो प्रथम, लेउ समझि सब कोइ,
विद्या बाल लहि मति परम अबला सबला होई।

यहाँ कवि पर युग चेतना का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन पंक्तियों के माध्यम से नारी शिक्षा के महत्त्व को उजागर करने का सुन्दर प्रयास किया गया है। मैथिलीशरण गुप्त की सुप्रसिद्ध रचना 'जय भारत' में अनेक पौराणिक नारी पात्रों का अत्यन्त संवेदनशील एवं मनोहारी चित्रण किया गया है । इस ग्रंथ में महाभारतकालीन नारी पात्रों यथा-कुन्ती, द्रौपदी, आदि के माध्यम से नारी जीवन की विवशता, कुण्ठा, सहनशीलता, रौद्रता, विचलनता आदि को सशक्त अभिव्यति प्रदान की गई है। "द्रौपदी इस प्रबन्धकाव्य की प्रधान पात्री हैं। वे सच्ची गृहलक्ष्मी हैं। जीवन में उनहोंने बहुत दुख सहे। अपने अपमान का ध्यान कर कभी-कभी अपने वीर पतियों के प्रति वे व्यंग्यमयी हो उठती थीं, पर फिर स्वयं पछताने लगती थीं। अपने पत्नीत्व को उन्होंने सदैव विवेक की दृष्टि से देखा। वे हंसकर कहा करती थी कि पुरुषों में जो बहु-विवाह की प्रथा प्रचलित हैं, उसका सारा बदला उन्होंने ले लिया है।" 'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त जी की एक अन्य सुप्रसिद्ध रचना हैं। ये महाकाव्य 12 सर्गों में विभाजित है। इसके अन्तर्गत श्रीराम जी के वनवास, अयोध्यावासियों की पीड़ा, वनगमन तथा मुख्य रूप से लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला के विरह का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया गया है।

विश्वम्भर मानव, रामकिशोर के शब्दों में

विरहवर्णन की जो रूपरेखा है, यदि उसे विस्तार न किया जाता तो साकेत की मार्मिकता द्विगुणित हो जाती। उर्मिला के विरह-वर्णन में कई स्थानों पर सुन्दर भाव झलक मारते हैं। उर्मिला की सहानुभूति पशु-पक्षियों तक विस्तृत है।

इसी प्रकार द्विवेदी काल के असंख्य कवियों ने अपने अद्भुत लेखनी के माध्यम से संपूर्ण नारी जीवन को सुन्दर ढंग से चित्रित किया है।

(ग) छायावाददयुगीन काव्य में चित्रित नारी:

छायावाद काल हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का तृतीय एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चरण है। छायावाद काल का आरम्भ प्रथम विश्वयुद्ध के समय हुआ था। इसे आधुनिक काल का 'स्वर्णयुग' कहा जाता है।श्री मुकुटधर पाण्डेय जी ने सन् 1920 में 'छायावाद' शब्द का उपयोग 'श्री शारदा' नामक पत्रिका में किया। 'छायावाद' के विषय में अनेक विचारकों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में:

"छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिये। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका सम्बन्ध कथावस्तु से होता है, अर्थात् जहाँ कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। 'छायावाद' शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य-शैली या पद्धति-विशेष के व्यापक अर्थ में हैं।"

छायावादी काव्य पर पाश्चात्य विचारधाराओं का भी गहरा प्रभाव रहा है। छायावाद को रहस्यवादी काव्यधारा के नाम से भी जाना जाता है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकान्त त्रिपठी 'निराला', महादेवी वर्मा को इस काल के चार आधार स्तम्भ कहा जाता है। इस काल के कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। आत्मनिष्ठ काव्य, प्राकृतिक चित्रण, सौन्दर्यबोध, रहस्यानुवादी चेतना, नारी के प्रति सम्मान, वेदना, राष्ट्रीय भावना, प्रतीकात्मकता, गेय तत्त्व, मानवतावाद, सांस्कृतिक चेतना आदि छायावाद काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

छायावाद काल के मुख्य कवि

जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, यद्यपि इस काल के कवियों ने प्रकृति को अपनी कविताओं में विशेष स्थान प्रदान किया है परन्तु इन्होंने प्रकृति में भी नारी की कल्पना की है जिस से इनका प्राकृतिक चित्रण अत्यन्त आकर्षक बन गया है। इन्होंने अपने काव्य में स्वच्छन्दतावादी दृष्टिकोण अपनाया है।

जयशंकर प्रसाद अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'कामायनी' में एक स्थान पर कहते हैं:-

"नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग॥"

यहाँ प्रसाद जी ने नारी के सौन्दर्य का अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक एवं मर्यादित चित्र प्रस्तुत किया है।एक अन्य स्थान पर भी कवि प्रसाद कहते हैं:-

"नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास-रजत-नग पगतल में,
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।"

यहाँ कवि ने नारी के औचित्य को, नारी की महिमा को अत्यन्त सुन्दर शब्दों में उजागर किया है तथा एक मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है। सुमित्रानंदन पंत अपनी एक कविता 'पूर्व समृति' में कहते है:-

"सोने का मृग रहा मूक नारी के

मन से पावन रज तन का मूल्यांकन,
लक्ष्मण रेखा सीमा घर आँगन की,
लोक लाँघना लोक दृष्टि का लाँछन ॥"

यहाँ कवि ने पौराणिक कथा के माध्यम से नारी जीवन की पारम्परिक सीमाओं और सामाजिक दृष्टिकोण के विषय में चर्चा की है।

इसी प्रकार छायावाद काल के अनेक कवियों और कवयित्रियों ने भी नारी जीवन को अपने काव्य के माध्यम से चित्रित किया है। इन्होंने नारी जीवन के प्रत्येक पक्ष को बड़े यथार्थ रूप में अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त किया है।

(घ) प्रगतिवादी व प्रयोगवादी काव्य में चित्रित नारी

प्रगतिवाद और प्रयोगवाद दो भिन्न-भिन्न काव्यधाराएँ हैं जो लगभग एक समान प्रवृत्तियों से परिपूर्ण हैं। इन काव्यधाराओं के अन्तर्गत विभिन्न कवियों ने वैयक्तिकता, सामाजिक यथार्थ, नारी की समस्याओं, किसानों व मजदूरों के प्रति संवेदना, शोषक वर्ग व पूंजीपति वर्ग के प्रति घृणा, नवीन बिम्बों व प्रतीकों का प्रयोग, क्रांति की भावना, मार्क्सवाद का प्रभाव, मानवतावाद, समसामयिक समस्याओं का चित्रण, घोर अहंनिष्ठ व्यक्तिवाद, अति बौद्धिकता, निराशावाद, उपमानों की नवीनता, वैज्ञनिक युग बोध, नवीन मूल्यों का चित्रण, रस, छन्द, अलंकार, भाषा शैली आदि इन काव्यधाराओं की मुख्य विशेषताएँ हैं। इन दोनों काव्यधाराओं के कवियों ने अपनी विभिन्न रचनाओं में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं, निराशा, वेदना, संघर्ष, सौन्दर्य आदि को चित्रित किया है जो कि अत्यन्त यथार्थपूर्ण प्रतीत होता है।

प्रमुख प्रगतिवादी व प्रयोगवादी कवि

नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह सुमन, त्रिलोचन, रांगेय राघव, शिवदान सिंह चौहान, अज्ञेय, भारत भूषण अग्रवाल, गजानन माधव मुक्तिबोध, श्मशेर सिंह बहादुर, श्री नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, रामधारी सिंह दिनकर आदि इन काव्यधाराओं के अनेक कवियों ने अपने काव्य में युगों से शोषित नारी के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है। सहानुभूति प्रकट की है।

इन कवियों ने ग्रामीण व शहरी स्त्री की दशा का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। इन्होंने अनेक नवीन प्रतीकों व बिम्बों के माध्यम से शोषित नारी के विभिन्न रूपों को अपने काव्य में चित्रित किया है। रामधारी सिंह 'दिनकर' जी कहते हैं:-

"श्वानों को मिलता वस्त्र दूध, भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर, जाड़ों की रात बिताते हैं॥
युवती की लज्जा बसन बेच, जब ब्याज चुकाये जाते हैं।
मलिक जब तेल फूलेलों पर पानी-सा द्रव्य बहाते हैं।
पापी महलों का अहंकार देता मुझको तब आमन्त्रण॥

यहाँ कवि ने भारतीय समाज के कारूणिक चित्र को अत्यन्त मार्मिकता, संवेदना तथा वास्तविकता के साथ चित्रित किया है। समाज की विपन्नता, शोषण, नारी व बालकों की विवशता, शोषक वर्ग की अहंकारमयी प्रवृत्ति को यथार्थ रूप में व्यक्त किया गया है। अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'कुरुक्षेत्र' में दिनकर जी कहते हैं:-

"भरी सभा में लाज द्रौपदी
की न गई थी लूटी
वह तो यही कराल आग
थी निर्भय होकर फूटी।"

यहाँ कवि ने द्रौपदी (पौराणिक पात्र) के माध्यम से नारी के अपमान के परिणाम से सम्पूर्ण समाज को परिचित करवाने का सराहनीय प्रयास किया है। धर्मवीर भारती अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'कनुप्रिया' में कहते हैं-

"और मैं फिर थक कर सो जाती हूँ
अचेत-संज्ञाहीन-
और फिर वही चारों और फैला
गहरा अँधेरा और अथाह सूनापन
और तुम फिर मुझे जगाते हो।"

यहाँ धर्मवीर भारती जी ने राधा-कृष्ण के प्रेम तथा राधा के विरह का अत्यन्त मार्मिक व हृदय विदारक चित्रण प्रस्तुत किया है। राधा के माध्यम से नारी के विरहिणी रूप को सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है।

इसी प्रकार प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी काव्यधारा के अनेक कवियों ने अपने काव्य में नारी के विभिन्न स्वरूपों को सुन्दर ढंग से चित्रित किया है।

(ङ) समकालीन काव्य में चित्रित नारी

'समकालीन कविता' हिन्दी साहित्य के इतिहास का अंतिम चरण है। इसे अनेक नामों यथा-अकविता, गद्य कवित, संक्रमित कविता, नई कविता आदि के नाम से भी जाना जाता है। आधुनिक युग में भारतीय समाज में असंख्य परिवर्तन हुये, इसके साथ ही नारी की दशा और दिशा में भी अद्भुत बदलाव आया। इन सबका यथार्थ चित्रण समकालीन कवियों के काव्य में देखने को मिलता है।

व्यक्ति केन्द्र बिन्दु, यथार्थवादी दृष्टिकोण, क्षणवाद, नवीन प्रतीक, परम्पराओं का विरोध, मानव की निराशा, कुण्ठा, संघर्ष, अजनबीपन, अकेलापन, आधुनिकता, स्वच्छन्दता, नारी के प्रति संकीर्ण दृष्टिकोण आदि इस काव्य की मुख्य विशेषताएँ हैं।

समकलीन काव्य के मुख्य कवि

शमशेर सिंह बहादुर, नागार्जुन, त्रिलोचन, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', रघुवीर सहाय, केदारनाथ अग्रवाल, भवानी प्रासद मिश्र, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही, श्रीकान्त वर्मा, कुँवर नारायण, अशोक वाजपेयी, लीलधर जगूड़ी, मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, अरूण कमल।

हिन्दी साहित्य के समकालीन कवियों ने भारतीय समाज के प्रत्येक पक्ष को अपने काव्य के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के समक्ष उजागर किया है। इन कवियों ने नारी को अपने काव्य में विशेष स्थान प्रदान किया। एक ओर इन कवियों ने नारी के संघर्ष, विवशता, शोषण तथा उसकी शिक्त को चित्रित किया परन्तु दूसरी ओर नारी के सौन्दर्य का अश्लील चित्रण भी किया है। यहाँ तक की अनेक लेखिकाओं ने भी साहित्य की सीमाओं को लांघकर नारी को केवल सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति या वासना की विषयवस्तु बनाकर रख दिया है। कहने का भाव है कि समकालीन काव्य में नारी के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों को उजागर किया गया है।

समकालीन कवि राजेश जोशी कहते हैं

''ऐसे वक्त में हमेशा स्त्रियाँ ही मदद कर सकती हैं
यह थोड़ा अजीब जरूर लगेगा लेकिन यही सच है
कि जो स्त्रियाँ ही उन लोगों के बारे में सबसे ज्यादा जानती हैं
जो आड़े वक्त में काम आते हैं
जो जीवन की छोटी-छोटी गड़बड़ियों को
दुरुस्त करने का हुनर जानते हें ॥"

यहां कवि ने नारी की कर्तव्यपरायणता एवं उसके महत्त्व को बताया है कि वो किस प्रकार छोटी-मोटी समस्याओं का समाधान अपनी बुद्धिमता से कर लेती हैं तथा समाज में संतुलन बनाये रखती हैं।

मंगलेश-डबराल एक कविता में नारी की यथार्थ दशा को अंकित करते हुये कहते हैं:-

"एक आदमी के पीछे
चुपचाप एक स्त्री चलती है
उसके पैरों के निशान पर
अपने पैर रखती हुई
रास्ते भर नहीं उठाती निगाह
किसी चट्टन के पीछे
सन्नाटे में एकाएक एक स्त्री सिसकती है
अपनी युवावस्था में
अगले ही दिन आने वाले
बुढ़ापे से बेखबर।"

इन पंक्तियों में कवि ने एक नारी के सम्पूर्ण जीवन की करुण कहानी को; साथ ही पुरुष प्रधान समाज की कटु सच्चाई को अत्यन्त यथार्थ रूप में व्यक्त किया है।

अशोक वाजपेयी कहते हैं

"तुम्हारी आँखों में नई आँखों के छोटे-छोटे दृश्य हैं।
तुम्हारे कन्धों पर नये कन्धों का हल्का-सा दबाव है।
तुम्हारे होठों पर नई बोली की पहली चुप्पी है।
और तुम्हारी ऊँगलियों के पास कुछ नये स्पर्श हैं।
माँ, मेरी माँ।"

इन पंक्तियों में वाजपेयी जी ने एक ऐसी माँ को चित्रित किया है जो अपने परिवार के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर देती है, संघर्ष करती है।

निष्कर्षत:

उपर्युक्त विवेचन के अन्तर्गत आधुनिक हिन्दी काव्य के अन्तर्गत चित्रित नारी के रूपों को संक्षिप्त में उजागर करने का प्रयास किया गया है। आधुनिक काल में नारी के जीवन में अनेक सकारात्मक एवं नकारात्मक परिवर्तन हुये जिन्हें इस काल के विभिन्न कवियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। भारतेन्दु युग में नारी को अपने अस्तित्व के लिये ही कड़ा संघर्ष करना पड़ रहा था। फिर धीरे-धीरे सामाजिक आंदोलनों, विभिन्न समाज सुधारकों, संस्थाओं के प्रयासों के कारण नारी जीवन में सुधार आने लगा। द्विवेदी युग में ही ऐसे परिवर्तन आने लगे थे। छायावाद काल में एक बार फिर नारी को अपनी प्रतिष्ठा हेतु लड़ना पड़ा। इस काल में प्रकृति के माध्यम से नारी सौन्दर्य की ओर ही अधिक ध्यान दिया गया। उसकी समस्याओं की अपेक्षा उसके कामुक रूप को महत्त्व दिया गया। प्रगतिवाद में नारी के शोषण, विवशता, निर्धनता को काव्य में विशेष स्थान दिया गया। प्रयोगवादी काव्यधारा में एक ओर शोषित नारी की संघर्ष गाथा को उजागर किया तो दूसरी ओर उसे अनेक नवीन प्रतीकों व बिम्बों के जाल में उलझाकर प्रस्तुत किय गया। समकालीन काव्य के अन्तर्गत नारी जीवन के प्रत्येक पक्ष को सकारात्मक व नकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है। आज साहित्य की सीमाओं को तोड़कर कवि नारी को अपने काव्य का आधार बनाकर रचना करता है।

संदर्भ सूची

1. विश्वम्भर 'मानव' रामकिशोर शर्मा, 'आधुनिक कवि' लोकभारती प्रकाशन, प्रयागरज, सं॰ 2019, पृ॰ 30
2. उपर्युक्त, पृ॰ 22
3. शिव कुमार शर्म, हिन्दी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं॰ 2010, पृ॰ 484
4. डॉ॰ नगेन्द्र, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, सं॰ 2001, पृ॰ 498
5. डॉ॰ नगेन्द्र, उपर्युक्त, पृ॰ 505
6. विश्वम्भर मानव, राम किशोर, उपर्युक्त, पृ॰ 54
7. विश्वम्भर मानव, रामकिशोर, उपर्युक्त, पृ॰ 52
8. डॉ॰ लालचन्द गुप्त 'मंगल', हिन्दी साहित्य का इतिहास, निर्मल पब्लिशिंग हाऊस, कुरुक्षेत्र सं॰ 2023, पृ॰ 192
9. शिवकुमार शर्मा, उपर्युक्त, पृ॰ 496
10. जयशंकर प्रसाद, 'कामायनी' प्रकाशन संस्थान, दिल्ली सं॰ 2021, पृ॰ 44
11. कुमार विमल, 'सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, सं॰ 2009, पृ॰ 163
12. शिवकुमार शर्म, उपर्युक्त, पृ॰ 529
13. रामधारी सिंह दिनकर, 'कुरुक्षेत्र' राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, सं॰ 2019, पृ॰ 39
14. धर्मवीर भारती, 'कनुप्रिया' भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, सं॰ 2006, पृ॰ 39
15. विश्वम्भर 'मानव' रामकिशोर शर्मा, उपर्युक्त, पृ॰ 340

16. विश्वम्भर 'मानव' रामकिशोर शर्मा, उपर्युक्त, पृ॰ 333
17. उपर्युक्त, पृ॰ 305